एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

Scanned by CamScanner

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-17

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

****

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -16 का शेष (नाटक का मूल पाठ)...]

द्वितीय अंक

****

बिम्बिसार : ठहरो! तुम्हारा यह अभियोग अन्यायपूर्ण है। क्या इसी कारण तो बेटी

Scanned by CamScanner

पद्मावती नहीं चली गई? क्या इसी कारण तो कुणीक मेरी भी आज्ञा सुनने में आनाकानी नहीं करने लगा है? कैसा उत्पात मचाना चाहती हो?

छलना : मैं उत्पात रोकना चाहती हूँ। आपको कुणीक के युवराज्याभिषेक की घोषणा आज ही करनी पड़ेगी।

वासवी : (प्रवेश करके) नाथ, मैं भी इससे सहमत हूँ। मैं चाहती हूँ कि यह उत्सव देखकर और आपकी आज्ञा लेकर मैं कोसल जाऊँ। सुदत्त आज आया है, भाई ने मुझे बुलाया है।

Scanned by CamScanner

बिम्बिसार : कौन, देवी वासवी!

छलना : हाँ, महाराज!

कंचुकी : (प्रवेश करके) महाराज! जय हो! भगवान् तथागत गौतम आ रहे हैं।

बिम्बिसार : सादर लिवा लाओ। (कंचुकी का प्रस्थान) छलना! हृदय का आवेग कम करो, महाश्रमण के सामने दुर्बलता न प्रकट होने पावे।

अजात को साथ लिए हुए गौतम का प्रवेश। सब नमस्कार करते हैं।

Scanned by CamScanner

गौतम : कल्याण हो। शान्ति मिले!!

बिम्बिसार : भगवन्, आपने पधारकर मुझे अनुगृहीत किया।

गौतम : राजन्! कोई किसी को अनुगृहीत नहीं करता। विश्वभर में यदि कुछ कर सकती है तो वह करुणा है, जो प्राणिमात्र में समदृष्टि रखती है-

गोधूली के राग-पटल में स्नेहांचल फहराती है।

Scanned by CamScanner

स्निग्ध उषा के शुभ्र गगन में हास विलास
दिखाती है।।

मुग्ध मधुर बालक के मुख पर चन्द्रकान्ति
बरसाती है।

निर्निमेष ताराओं से वह ओस बूँद भर लाती है।।

निष्ठुर आदि-सृष्टि पशुओं की विजित हुई इस
करुणा से।

मानव का महत्त्व जगती पर फैला अरुणा करुणा
से।।

Scanned by CamScanner

(नाटक का शेष मूल पाठ भाग-18 में....)

Scanned by CamScanner